IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 5, June 2022
Impact Factor: 6.252

हिन्दी उपन्यासों में कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का एक अध्ययन

Dr. Brujlali Patel[1] and Ramashankar Yadav[2]
Professor and Head, Department of Hindi[1]
Research Scholar, Department of Hindi[2]
Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, Madhya Pradesh, India[1]
Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, Madhya Pradesh, India[2]

सारांषः भारतीय समाज में कामकाजी महिलाओं की स्थिति वैदिक युग से लेकर समसामायिक स्तर तक भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति कभी एक–सी नही रही। बदलते सामाजिक परिवेश के साथ–साथ स्त्रियों की स्थियों भी परिवर्तित होती रही है। इसी समाज में महिलाओं का कभी गौरपूर्ण सम्मान तो कभी उसे दासी के रूप में जीवन यापन करना पड़ा है। वर्तमान परिपेक्ष्य में स्त्रियों में बहुत सुधार हुआ वे सामाजिक, आर्थिक एंव राजनैतिक दृष्टि से सशक्त हुई है। भारतीय समाज में परिवार तथा परिवार में मॉ की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। वह परिवार की केन्द्र बिन्दू होती है। ''कामकाजी महिला'' से तात्पर्य उन महिलाओं से है जो आर्थिक उपार्जन हेतु विभिन्न कार्य में संलग्न रहती है। कार्यरत कामकाजी महिलाएं वे महिलाए है जो मानसिक या शारीरिक श्रम का कार्य करती है। जिन्हे उस कार्य के बदले आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। स्त्रियों की इस नही भूमिका से भारतीय समाज में परम्परागत सामाजिक मूल्यों के ढ़ाचे में परिवर्तन आया है।

मुख्य शब्दः उपन्यास, कामकाजी महिला, समस्य, वैदिक युव आदि ।

प्रस्तावनाः

इस प्रकार देह व्यापार इस कदर बढ़ रहा है कि यह उद्योग धन्धे का रूप धारण करने लगा है। इसके अन्तर्राष्ट्रीय गिरोह हो गये हैं और इस धन्धे में लाखों औरतें काम करने लगी हैं। गली–गली में इसके अड्डे और दलाल मिल जायेंगे। अभी जयपुर बनीपार्क स्थित मसाज पार्लर की आड़ में देह व्यापार के अड्डे को पकड़ा गया जिसमें चार युवतियों सहित एक दलाल को गिरफ्तार किया गया। चारों युवतियाँ जयपुर की रहने वाली हैं। पुलिस ने मसाज पार्लर में कंडोम के पैकेट, अश्लील तस्वीर, ब्लू फिल्में भी बरामद की। पार्लर का संचालन दीपक गौतम करता था। महका भारत के 6 सितम्बर अंक में छपी खबर के अनुसार जयपुर शहर जैसे–जैसे विराट रूप धारण करता जा रहा है वैसे–वैसे यहाँ देह व्यापार भी बढ़ रहा है। उसका रूप भी विराट हो रहा है। सदर थाना जयपुर ने गत दिनों दो यवतियों को दलाल सहित गिरफ्तार किया था जिनके कब्जे से चार मोबाइल एक मारुति कार और एक हजार रुपये बरामद किये। गिरफ्तार दलाल दिल्ली से युवतियाँ लाता था। जयपुर के कबीर मार्ग से चुरु के बजरंग जाट को दो युवतियों के साथ गिरफ्तार किया था। बजरंग जाट उनको 15 हजार रुपये हफ्ते के हिसाब से दिल्ली से जयपुर लाया था। इसी प्रकार पुलिस ने वैशाली नगर से छह युवतियों सहित दो दलालों को गिरफ्तार किया था जिन्होंने पुलिस को बताया कि उन्हें दलाल 57 हजार रुपये हफ्ते के हिसाब से दिल्ली से जयपुर लाया था। इसी प्रकार मानसरोवर में भी देह व्यापार में लिप्त युवतियाँ पकड़ी गयी थीं। पुलिस का कहना है कि इस धन्धे में कर्ताधर्ता दलाल होते हैं, वे ही युवतियों की सप्लाई करते हैं। इनका बहुत बड़ा गिरोह है जिनका पता इनके पास पकड़े गये मोबाइलों से लगाया जा सकता है। पर ये पता लगाये कौन हर किसी के सामने ये दलाल इन युवतियों की देह परोस देते हैं। इन गिरोहों के सूत्र बहुत ऊँचे समर्थ लोगों के साथ जुड़े हैं जो इन देह व्यापारियों की रक्षा करते हैं। उन्हीं की छत्रछाया में देह व्यापार दिन–रात फल–फूल रहा है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 5, June 2022
Impact Factor: 6.252

आत्म निर्भरता में कमी

भारतीय समाज में कार्यशील महिलाएं का यातना अन्तहीन लगती है कोई लड़की इस कारण लड़की होना नहीं चाहती पर प्राकृत व्यवस्था को कौन टाल सकता हैं ? इसमें लड़की का कोई दोष नही जब समाज और समाज के कर्णधार ही गन्दगी' फैलाये तो सफाई कैसे हो ? आज के परिवेश में नारी जीवन जीना क्या अपराध नहीं लगता। उसके रास्ते में पग–पग समाज द्वारा खड़े किये कितने अवरोधक हैं वह उन्हें कैसे पार करे ? ये तो सम्पूर्ण समाज के सोचने की बात है।

भूमण्डलीकरण के कारण पूरा विश्व परिवार जैसा हो गया है। उसका प्रभाव जीवन शैली पर भी पड़ा है। जीवन फैशन से प्रभावित होने के कार का भूख और आदमी की आवश्यकता बढ़ गयी है जिसकी पूर्ति के लिए आदमी नये–नये तरीके ईजाद करने लगा है। यह प्रभाव नयी पीढ़ी पर अधिक हैं। लड़कियों को आकर्षित दिखना उसके स्वभाव में है इस के लिये वह कॉलगर्ल जैसा काम सहज कर सकती है। पसा भी अच्छा मिलता है। इस मानसिकता ने शहरों गांवों म सक्स स्कडला को अधिक। बढ़ावा दिया है जिसमें दलालों की अहम भूमिका है। इसमें नारी ही नारी को अधिक पटाती है, उसे लालच देती है और इस जघन्य मार्ग पर उतारती है। एक के बाद एक सामने आ रहे यौन प्रकरणों में राजनेता व अफसरों के अलावा समाज के प्रभावी लोग शामिल हैं।

कालजयी कवि माधव मुक्ति बोध ने अपनी कविता अँधेरे में, अपराधियों के संयक्त परिवार की चर्चा की है जिसमें इलाके के गुण्डों, जनप्रतिनिधियों, अमीर आदमियों अफसरों, वकीलों, पत्रकारों और आलोचकों आदि को शामिल किया गया है, फिर कौन शेष बचता? वही जिसका शोषण किया जाता है और वह बेचारा विवश समाज है जो कछ। नहीं कर सकता है। वेश्यावृत्ति में विवशता के साथ फैशन और दूसरे जैसा बनने दिखने। की भूख ने भी नारी को इस धन्धे में उतारा है। यह धन्धा महानगरों में तो था ही छोटे शहरों से होकर गाँवों तक भी पहुंच गया है। जहाँ से भोली–भाली लड़कियों को बड़ा रोजगार दिलाने का लालच, शहरी लड़कियों की तड़क–भड़क शहर की ओर खींच लाती है। एक बार दलदल में फँसने के बाद फिर उनका बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है।

जम्मू कश्मीर, उत्तरांचल एवं अब राजस्थान की राजधानी जयपुर में हाल ही सामने । आये सेक्स स्कैंडलों पर नजर डालने से पता चलता है कि कमसिन लड़कियों का योन। शोषण करने के मामले में कोई पीछे नहीं है। हर कोई इस चुम्बकीय आकर्षण म फंसता नजर आता है। हालात बता रहे हैं कि ऐसे सेक्स स्कैंडलों की संख्या बढ़ेगी। युवा स्त्रियाँ खुलती हुई अर्थव्यवस्था में उत्तरोत्तर रोजगार की तलाश निकलेंगी। मुम्बईया फिल्म इण्डस्ट्री ने बंटी और बबली की जो तस्वीर हमारे सामने रखी है, बबली की महत्वाकांक्षी चतुर और चालाक लड़की की जो फेंटेसी पेश की है, वह तो आज और आने वाले कल की बबलियों के सामने पीछे रह जायगी। इसमें उनका कोई दोष नहीं मीडिया जो अश्लीलता दे रहा है, समाज का वातावरण जो दे रहा है, और अर्थ की भूख फैशन जो दे रहा है वही तो आज की लड़कियाँ ले रही है। आज आदमी का सोच के केन्द्र मदह है, जो सब्जी से सस्ती है जिसकी सब्जी मण्डी की तरह मण्डियां लगता हैं जहाँ जिस्म खुला बिकता है।

भारतीय समाज में दोयम दर्जे का व्यवहार

नारी उत्पीड़न, बलात्कार व छीना–झपटी की बढ़ती वारदातों पर सरकार चिंतित है वह इस पर विधेयक लाकर कानून को कारगर बनाना चाहती है पर कानून के रखवाले ही जब कानून तोड़े तो फिर कानून विवश और नकारा हो जाता है. उसी अनुपात में अपराध और भ्रष्टाचार बढ़ जाता है। विशेष शोषण नारी की सहकर्मियों ऊपरी अधिकारियों या फिर परिचितों द्वारा होता है और किसी को शिकायत न करने की उनकी मजबूरी प्रतिष्ठा, बदनामी के डर के कारण बन जाती है। वे बहुत कम शिकायत कर पाती हैं और सहना का उत्पीडित होना अपनी नीयति मान लेती हैं। विरोध करने पर उसे और अधिक यातना सहन करनी पड़ सकती है। इस कारण चुप्पी साध लेती है। उनके पास विरोध का आधार वह ताकत नहीं रह जाती। ऐसी कामकाजी महिलाओं के

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 5, June 2022
Impact Factor: 6.252

लिए रात को काम न करने पर कट कर दी है। वहाँ तमाम कानूनों में फिर से संशोधन कर सख्त और कारगर बनाने के लिए विधेयक लाने की सरकार सोच रही है जिससे साथिन भंवरी देवी के साथ घटी घटना जैसी कोई घटना न घट सके। इस विधेयक के आने पर शिक्षण संस्थाओं में शिक्षिका एवं छात्राओं के साथ होने वाला उत्पीड़न भी कम होगा। किन्तु उत्पीड़न से बचने का सही उपाय तो जन जागरण से आम आदमी की मानसिकता बदलने से ही सम्भव है। आदमी अपने सामन्ती अहं को छोड़े और नारी को अपने बराबर की भागीदार समझे। उसे पैर की जूती, दासी न समझे। उसे आदर दे तथा आगे बढ़ने से न रोके । उसे मानवी समझे और बराबर का दर्जा दे।

भारत की नारी जाग रही है। वह चूँघट छोड़ बाहर निकल रही है। वह छुई मुई, होकर नहीं रहना चाहती। वह आदमी के साथ कदम मिलाकर चलना चाहती है। वह वघर छोड़कर जीन्स पहनने लगी है। वह जानती है कि स्त्री–पुरुष जीवन यात्रा में बराबर के सहयोगी हैं एक दूजे के पूरक हैं वह सहचरी होकर जीना चाहता हे दासा कर नहा, भारत में भी भमण्डलीकरण का पुरा असर है, उसकी जीवन शला म बदलाव आ गया है। वह इस प्रतिस्पर्धा के युग में प्रतिस्पर्धी बनकर खड़ा होना चाहती है तथा अग्रिम पंक्ति में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है। वह नर से परस्पर सहयोग सहभागिता की कामना करती है संघर्ष की

रेडियो स्टेशन से एक कहानी का प्रसारण हुआ जिसमें तीन पीढ़ियों की मानसिकता का चित्रण एक साथ किया गया। एक युवती के पिता गुजर गये। माँ को नौकरी मिल गयी। उधर नाना–नानी के बीच अकेला छोड़ कहीं चले गये। युवती कॉलेज में पढ़ती खुले विचारों की बॉय फ्रेण्ड भी है, वह उसको परखती है, वह उसकी दृष्टि में खरा उतरता। वह उस पर विश्वास करती है। युवती का मॉ का बॉस विधुर है और उस करता है। उसे परे मन से चाहता है इसलिए युवती को माँ के सामने आ बनाने का प्रस्ताव रखता है। युवती की माँ अपनी माँ के सामने दम यवती की नानी पुराने विचार एवं संस्कारों की है अतः अपनी विधवा की विवाह करने की इजाजत नहीं देती। इस कारण विवाह नहीं हो पाता है। जीवन जीते हैं। इस बात को युवती भली प्रकार जानती है। वह नानी की अकेले पीड़ा को भी पहचानती है। वह नानी के पास जाकर नाना को मना कर लाने की बात समझाती है। नानी पीड़ा से भरी होती है। स्वीकृति दे देती है। फिर वह नाना के पास जाती है और उसे घर लौट आने को मना लेती है। उधर माँ के बॉस से सीधा संवाद कर माँ से विवाह के लिये राजी कर लेती है। इस बीच अपने साथी मित्र को फिर से परखती। है कि वह जीवनभर साथ निभा सकता है कि नहीं। ।

तमाम परखने के बाद एक तिथि निश्चित करती है। उस दिन एक भोज आयोजित करती है जिसमें नानी से नाना को और माँ से अपने बॉस को वरमाला पहनाने को कहती है और स्वयं भी अपने मित्र साथी को वरमाला पहना कर एक साथ तीन पीढ़ियों का –विवाह रचाती है। आज की नारी समन्वय में विश्वास करती है तथा अतीत, वर्तमान और। भविष्य तीनों काल को एक साथ जीने की समझ रखती है। वह प्रतिभा में पुरुष से कहीं। पीछे नहीं लगती है वह मानव समाज के लिए अभिशाप नहीं वरदान सिद्ध हो सकती है। आवश्यकता है नर–नारी को सही परिप्रेक्ष्य में समझे।

सृष्टि की रचना में प्रकृति ने नर–नारी में कोई भेद नहीं किया। दोनों को बराबर का सहचर व सहयोगी बनाया है तथा सृजन में बराबर का भागीदार भी नर–नारी के सारे। भेद आदमी के द्वारा अपनी स्वार्थपूर्ति के लिये रचे हए हैं। कहने को कहा जाता है कि नारी को आर्थिक स्वतंत्रता मिल रही है। किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की एक रिपोर्ट । बताती है कि दुनिया की 90 प्रतिशत पूँजी पर नर का ही कब्जा है। लगता है आर्थिक दृष्टि से नारी को नर के बराबर आने में हजार वर्ष और लगेंगे। पितृसत्तात्मक समाजों में। जब तक पूँजी पीढ़ी दर पीढ़ी पिता द्वारा पुत्र को उत्तराधिकार में मिलती रहेगी नारी की यही गति बनी रहेगी। पिता उसे पराया धन ही समझता रहेगा तथा पति के घर जाकर वह दासी ही बनी रहेगी। आज भी उत्पादन और उत्पत्ति के तमाम साधनों पर आदमी का ही एकाधिकार है जिसमें धरती और नारी देह भी शामिल है। विवाह संस्था की स्थापना रुष ने नारी को अपने अधिकार में रखने के लिये ही की है। विवाह के बाद नारी देह पर नर का पूरा अधिकार हो जाता है, वह चाहे जैसे उसका उपभोग करे, उसमें नारी का मन कहीं नहीं देखा जाता। एक तरह से यह नर को नारी के साथ बलात्कार करने की

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 5, June 2022
Impact Factor: 6.252

स्वीकृति है और नारी की यातना भोगने की नियति उस पर यौन शुचिता, सतीत्व, नैतिकता की ने मर्यादाएँ नारी के लिए, नर की स्वच्छन्दता पर कोई पाबन्दी नहीं है। नर किसी भी के साथ सम्बन्ध बना सकता है। नारी यदि अपने पति के अतिरिक्त किसी और पुरुष ना करती है तो व्यभिचार कहलाता है। नर के लिए कोई सम्बोधन अपराध नहीं, ऐसा क्यों ? आदमी की इसी स्वच्छन्द प्रवृति के कारण ही व्यभिचार, वेश्यावृत्ति और कॉलगर्ल व्यापार फलफूल रहा है।

सारे कानून आदमी के पक्ष के बने हैं। ये कानून नारी की सुरक्षा नहीं करते, उसे आतंकित ही करते हैं। हर युग के केन्द्र में सदा एक बात महत्वपूर्ण होती है कभी समय के केन्द्र में शास्त्र थे। मनुस्मृति उस युग का विधान था और समाज शास्त्रों के बताये मार्ग पर चलता था फिर युग बदला, समय के केन्द्र में शस्त्र आये और तलवार, बन्दुक, भाले., बर्च्छियाँ महत्वपूर्ण हो गये। बल की प्रधानता के कारण जमीन, जोरु, बेची गयी। देह व्यापार के लिये वेश्यालय खोले गये। नारी को मनोरंजन का साधन बनाया गया। आज के केन्द्र में अर्थ है। जिसके पास पैसा है समर्थ है और समर्थ कुछ भी कर सकता साभाती सदा से दो खण्डों में बँटी है। इस पर शासक और शोषित सदा से रहे हैं। शासकों ने सदा शोषण किया है और शोषित सदा उत्पीड़ित हुआ है। नारी सदा शासित रही है इस कारण उसका भरपूर शोषण हुआ है। नारी को इस शोषण के विरुद्ध एक लम्बी पदार्ट लानी होगी। पल में परिवर्तन आने वाला नहीं आदमी की सामन्ती मानसिकता पल में नहीं बदलने वाली।

नारी का धर्मग्रन्थों ने बड़ा अहित किया है। सारे धर्मग्रन्थों के रचयिता नर है। धर्म को आदमी के लिये अफीम तथा नारी के लिये जहर कहा है जो धीरे–धीरे बेहोश करके मारता है। धर्म ने नारी के लिए नर को देवता–ईश्वर बना दिया। धर्मगुरुओं ने नारी को देवी बनाने के लिए ऐसी कहानियाँ रची और उन्हें सीता–सावित्री की कतार में खड़ा करना चाहा। सती की कहानी रची और यज्ञ कुण्ड में गिर कर मरना बता शिव के महत्व का प्रबल किया। मिथक रचे गये, शिव सती को कंधे पर उठा पूरे ब्रह्माण्ड में घूमे। जहाँ सती के अंग गिरे, शक्ति पीठ बने। पति को समर्पित सती शिव का अपमान सहन नहीं था। इस मिथक से ये समझाया गया कि पति को समर्पित होने में ही नारी गति एंव कल्याण है। आज भी भारतीय नारी अपने पति को अपना साथी सहचर न मानकर परमात्मा मानती है। चाहे वह उसे शराब पीकर पीटे यातना दे। वह परमात्मा का उपहार है जब तक नारी नर को देवता मानकर पीड़ा सहती रहेगी उसका का सकता। उसे अपने विचार बदलने होंगे तो नर को भी जब तक नारी नारे रति क्रीड़ा का साधन बनी रहेगी उसका कल्याण नहीं हो सकता।

नारी उत्पीड़न की कहानी पग–पग बिखरी पड़ी है। वह शोषण और विज्ञाप चीज बनकर रह गयी है। उसे शारीरिक ही नहीं मानसिक उत्पीड़न भी पग–पग पड़ता है। साबुन, माचिस, शराब, सिगरेट, नारियल तेल, साड़ियों एवं तौलियों पर नहीं, स्कूटरों, कारों तक के विज्ञापनों में उसकी नंगी, अधनंगी देह सहज देखने को जायेगी। सिनेमाओं के बड़े–बड़े पोस्टर, पत्र–पत्रिकाओं में नारी के अश्लील चित्र समाज को क्या देना चाहते हैं? बाबी, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् और राम तेरी गंगा मेली में नारी के उभरते उत्तेजक अंग प्रदर्शन क्या हैं ? न्यायालय ने भी कह दिया कि नारी फहड व नंगापन अश्लील नहीं है। बड़े अफसोस की बात है।

आज उसके नये–नये तरीके इजाद हो गये हैं, गली–गली में ब्यूटी पार्लरों, होटलों, ढाबों, झुग्गी–झोंपड़ियों, केफे हाऊसों कौनसी ऐसी जगह है जहाँ नारी की देह का व्यापार नहीं होता। कहीं कैबरे है तो कहीं वेश्यालय तो कहीं काल गर्ल्स, पास में पैसा हो तो ये मक्खियों की तरह जहाँ तहाँ मंडराती मिल जायेंगी। अब तो इनका चलन गाँवों तक फैल गया है जिसमें दलालों का महत्वपूर्ण हाथ है। स्त्रियाँ भी दलाली में पुरुषों के हाथों नाचती हैं। ये धन्धा शराब के बाद पहले नम्बर पर है जिसको उद्योग–धन्धे की तरह चलाया जाता है। इसके बड़े गिरोह हैं जिसमें नेता से लेकर पुलिस तक का हाथ है। नारी देह शोषण में सब की भागीदारी है तो यह व्यभिचार कैसे रुके?

रिश्तों में विश्वास की आवश्यकता है और पुरुष को स्वभाव में शंकालु प्रवृत्ति मिली है। अतः वह पग–पग अपनी पत्नी पर निराधार अविश्वास कर जीवन में कटता घोल लेता है और अपनी ही आग में जलता रहता है। उसे समझना चाहिये कि नारी देवी या दासी होने से पहले मानवी होती है और मानव की तरह ही जीना चाहती है। आज के युग में आदमी का धर्म काटना,

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 5, June 2022
Impact Factor: 6.252

मारना, उजाड़ना और पीड़ा पहुँचाना रह गया है तो हम किस धर्म की बात करें जो मानवता की रक्षा करें। धर्म में कर्त्तव्य का बोध है जो कहीं दिखाई नहीं देता है। नारी को सुहाग के नाम पर बिंदी, चडी, मंगल सूत्र से बाँधकर पति के हवाले कर दिया कि वही तेरी रक्षा करेगा। वह पति की आज्ञा मानेगी, उसका आदेश टालना ईश्वर की अज्ञा टालना होगा जिसकी सजा नारी को अवश्य मिलती है। पति की आज्ञा टालने पर नादान औरत को सजा मिलती ही है।

मंजू नामक लड़की जब विवाहित होकर पति के घर आई तो उसके ससुर ने उससे बलात्कार करना चाहा, मंजू के मना करने और बलात्कार को विफल करने पर ससुर द्वारा वह मार दी गयी। सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने नारी को रचकर उससे बलात्कार करना चाहा तो मंजू के ससुर ने कौन सा नया काम किया पराणों में भाई के साथ बहिन के विवाह का प्रसंग आता है तो आज के समय में रिश्तों के टूटने की बात कौनसी नयी लगती है। इतिहास अपने को दोहराता है जिसके चलते रिश्ते टूट रहे हैं। आदमी फिर आदिम हो रहा है।

स्त्री वर्ग का समाजशास्त्र सब से अलग लगता है। देशकाल बदला पर नारी का शोषण नहीं बदला। नये नये रूप बदलकर नये–नये ढंग से सामने आता रहा। नारी की नी अलग कोई पहचान नहीं। वह पति के नाम से ही जानी जाती है। वह सदा से सप वासना की शिकार होती रही है। वह स्त्री होने के कारण ही सदा से मर्दो के हमले झलती रही है. लुटती रही है। उसकी लूट स्वादिष्ट मिठाई जैसी रही है जिसे कोई भी सर्ट खा ले। जिसके मालिक कमजोर और गरीब होते हैं ऐसी स्त्रियों को समर्थ लोग' भोगते हैं। बहुत सी औरतें वेश्यावृत्ति करते वक्त अपना नाम बदल लेती हैं जिससे उनको कोई पहचान न सके।

वेश्यावृत्ति में स्त्रियाँ आजीविका कमाने के लिये उतरती हैं और अपनी देह की कीमत वसूलती हैं। पत्नी और वेश्या में इतना ही अन्तर है कि वेश्या की अल्पकालीन सेवा है तो पत्नी की जीवनभर की। अतः पत्नी–रोटी, कपड़ा और मकान और सुरक्षा माँगती है और वेश्या देह की कीमत । पत्नी की अपेक्षा ज्यादा स्वतन्त्र होती है। स्त्री कोई जी हो उसका जवान जिस्म ही उसकी पूंजी है। नारी निकेतन भी क्या है? केवल नारी गोस्त को दुकान है। नारी देह शहद लगी रोटी है जिसके लिए हर कोई ललचाता है।

यह युग सत्य है कि समर्थ को पूजा जाता है और उपयोगी को पूछा जाता है। नारी को उपभोग की वस्तु बना उपयोगी बना डाला इसके कारण मनोरंजन के लिए वह एक सर्वश्रेष्ठ साधन बनकर रह गयी। पति कैसा भी हो उसको मालिक मान कर उसकी आज्ञा पर चलना उसकी नियति बन गयी है। उसे तलाक लेना उनके वश की बात नहीं। हिम्मत करने वाली के लिये यातना का मार्ग खोल दिया जाता है। उसके पक्ष में कोई खड़ा नहीं दिखाई देता। सभी स्त्रियाँ फूलन तो हो नहीं सकती जो अन्याय के विरुद्ध बन्दूक उठा सकें।

निरक्षर नारी के चेहरे पर दो आँखे तो हैं पर समझ की रोशनी उनमें नहीं होने के कारण पग–पग पीड़ा भोगती है। फिर चतुर बन्दर बुद्धि के लोग नारी को लड़ती बिल्लियाँ बना अपना स्वार्थ गाँठते हैं। हर जगह आरक्षण के बाद भी नारी नर का ही हथियार बनकर खड़ी है। उसका अपना अलग अस्तित्व एवं असरदार व्यक्तित्व नहीं बन पा रहा है।

वह निरन्तर आगे तो बढ़ रही है। शिक्षा के क्षेत्र में पढ़–लिखकर नौकरियों एंव व्यवसायों में अपनी भागीदारी भी दे रही है उसका आगे बढना तब ही संभव हो सकता है जब उसके पति परिजन उसके सहयोगी बनें, आगे बढ़ने की हिम्मत दें, अपने भीतर किसी प्रकार का अविश्वास पनपने न दें। उसके मार्ग में कोई अवरोध खडा सास–ससर को भी चाहिये कि वे परम्पराओं की दुहाई देकर किसी प्रकार की अट. डालें, समय के साथ अपने को बदले।

आज की नयी पीढ़ी की पढ़ी–लिखी लड़कियाँ जीवन के हर पहलू की समझ रखती है। उन्हें अपना कैरियर बनाने की चिन्ता है, आगे बढ़ना चाहती हैं हर क्षेत्र में स्वावलम्बन और आत्मनिर्भरता का सोच रखती हैं। अपने पुराने संस्कारों से भी टकराती हैं। और नया रचने के लिए पुराने ढर्रे एवं परम्पराओं से ऊब भी होती है, फिर भी विवाहिता। नये सोच की बहू को अपने पति को खुश रखने के लिए बिस्तर पर चादर की तरह बिछना ही पड़ता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 5, June 2022
Impact Factor: 6.252

भँवरी बाई ने एक रूढ़ परम्परा का विरोध किया जिस पर उसके साथ सरेआम बलात्कार हुआ। तमाम नारी सशक्तीकरण संगठनों ने क्या किया कैसे आन्दोलन शांत हो गया ? चिल्लाने से नतीजे नहीं निकलते, कुछ कर गुजरने की हिम्मत से ही नतीजे फलित होते हैं। सिन्दूर से माँग भरने और गले में मंगल सूत्र की साँकल लटकाने से तो पुरुष का ही वर्चस्व बढ़ेगा। आवश्यकता है स्त्री–पुरुष दोनों का सोच बदले। आज के युग में सारी पवित्रताएँ पाप और धर्म ढोंग हो गये हैं देवी कहकर जिस कन्या की पूजा की जाती है उसी से छेड़खानी कर पुरुष किस शुचिता की बात करता है? किसी भी स्त्री के साथ कोई भी मनमानी करने से जब आदमी नहीं चूकता तो वह किस रिश्ते की बात करता है ? आज के युग में सारे रिश्ते बेमाने हो गये हैं केवल देह रह गयी है और नर–नारी की जगह आदमी नर–मादा हो गये हैं। पशु में और आज के आदमी में क्या अन्तर रह गया है ? स्त्री के शरीर में कोख लगी है। वह पति से इतना डरती है जितना यमराज से भी नहीं डरती क्योंकि यातना देने के लिए यमराज को यमलोक से आने में विलम्ब लगेगा पर पीड़ा पहुँचाने के लिए हथियार लिये पतिदेव तो छाया की तरह हरदम साथ ही लगे हैं।

सौन्दर्य के प्रति आकर्षण सदा से रहा है। आज भी विश्वस्तर पर सौन्दर्य प्रतियोगिताएँ कौनसी कम होती हैं। विश्व सुन्दरी के रूप में कितनी लडकियाँ अपने नंगे जिस्म का प्रदर्शन करती हैं, मॉडल बनती हैं। पर्दे के सामने और पीछे क्या–क्या होता है, किससे छिपा है। नारी सजने–सँवरने की वृत्ति छोड़ कर्मक्षेत्र में नर की सहयोगिनी बन कदम मिला चलने को तैयार है पर नर अपनी शिकारी वत्ति एवं सामंती विचारधारा का केंचल कब उतारेगा ? कोई भी यह बात विश्वास से नहीं कह सकता कि आदमी कभी सुधरेगा महादेवी वर्मा और कृष्ण सोबती क्रान्तिकारी लेखिकाओं का क्रान्तिस्वर उभर रहा है। नारी जग भी रही है पर उसे लोभ लालच की नींद की गोली देकर सुला दिया जाता है या राह से भटका दिया जाता है।

आज की नारी यह भली प्रकार जानती है कि निद्रा, भय, मैथुन, आहार जैसी चीजें पाकती हैं। ये प्राणी मात्र में होती है जिनकी आवश्यकता भी होती है पर इनका सौदा नहीं करना चाहिये। दोस्त भी जब पति की भूमिका में आता है तो सामन्त बन जाता है। कुछ दिनों में सब बदल जाता है। वैसे स्त्री–पुरुष भोग के लिए स्वतन्त्र प्राणी हैं। आदमी की मर्यादाओं के बन्धन ने उन्हें घेरे में बाँधकर रिश्तों का नाम दिया है। संस्कृति की भाषा में भ्रष्ट नारी को राक्षसी कहा है और संस्कारित समाज ने पथभ्रष्ट नारी को वेश्या, कुलटा कहा है। देश की प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी रही पर उन्होंने नारी उत्थान व उत्पीड़न से मुक्ति के लिए क्या किया ? उन्होंने अपने लिए राजकुमारी का जीवन जिया। वो चाहती तो पीड़ित नारी के उत्थान के लिए परस्पर सहयोग सहभागिता के मार्ग को विस्तार दे ती थी।

आज के युग की माँग है कि नर नारी को अपनी बराबर की सहयोगिनी मानकर ले दासी और देवी की गरिमा से मुक्त कर उसे मानवी बनने का अधिकार दे। अधिकार है उसे आदमी की तरह जीने का तब ही जीवन कुण्ठारहित हो सकेगा।

स्त्री होना ही तबाही के लिए काफी है। लावारिस औरत की जिन्दगी सड़क पर आवारा फिरते कत्ते से बदतर है। आँसुओं की आवाज नहीं होती मगर गीत में उदगार भरे होते हैं। काल्पनिक संसार का आधार सपना है। सपने देकर ही नारी को लटा जाता है। नारी के पास ऐसा शरीर है जो कभी भी लूट लिया जा सकता है। क्योंकि पुरुष अपने चसके को कभी लगाम नहीं दे सकता, वह स्वच्छन्द होकर नारी को समझा देता है कि तुम्हें सुरक्षा की आवश्यकता है। भय और आतंक का मिला–जुला रूप आतंक पैदा करता है। अन्याय के विरुद्ध खडी होने वाली स्त्री को भारत में बेशर्म बदचलन कहा जाता है। इस देश में सब कुछ बदला पर प्रेम का इतिहास नहीं बदला। इस देश की मान्यता रही कि प्रेम और पानी के बिना इन्सान सूख जाता है। औरत की अदा आदमी को उद्वेलित नहीं, उत्तेजित करती है। औरत का इतिहास हजारों वर्षों से पराधीनता के ताने–बाने का रहा है। आज की लड़की ससुराल में जाकर पिता द्वारा दिये जाने वाले दहेज पर अपना आधकार जताने लगी है। वह खुलकर कहने लगी है कि यह साज समान मेरी सुविधा के लिए और स्कूटर मेरे दफ्तर या कॉलेज जाने के लिए। वह यहाँ तक कहने में हिचक महसर नहीं करती कि मैं घर में कैद होकर नहीं जी सकती।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 5, June 2022
Impact Factor: 6.252

शिक्षित होने का अर्थ ही ये है कि नारी अपने विवेक से काम ले। भारतीय नारी की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि वह सब कछ समझते हए भी अपने पति के प्रेम में पड़ वा एस पतियों के प्रेम में जो प्रेम के काबिल होते ही नहीं वे घमंडी और सामन्ती हो जाते हैं जिससे प्रेम परवान नहीं चढ़कर यातना बन जाता है। औरत सिरोपी जाने तक अक्सर चुप ही रहकर सब सहन करती है। उसका विश्वास धीरे सब ठीक हो जायेगा। सदा समय एक जैसा नहीं रहता। यदि कोई अपने उत्पीडन से तंग आकर उसका विरोध करती है तो पुरुष के पास उसके चरित्रहनन का ही उपाय रहता है कि वह उसे बदचलन एवं कुलटा बताये। उसके विरुद्ध खडा होका बदनाम करे कठिनाइयाँ और मार्ग में बांधाएँ खड़ी करें। स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों को हो मानवीय मूल्यों से जोड़ना चाहिये। इस लड़ाई में आखिर नारी को ही हारकर मौन हो जाना पड़ता है। क्योंकि घर में शांति बनाकर रखना भी तो नारी का ही दायित्व माना गया। है। परिवारर को कुंठाओं और टूटन से बचाना स्त्री–पुरुष का बराबर का दायित्व है। किन्तु आदमी इस दायित्व से आँखें चुरा लेता है। वह साहस नहीं जुटा पाता। उसे अपना आचरण अपनी पत्नी के पक्ष में बदलना चाहिये, उसकी प्रतिस्पर्धा में खडा न होकर सहयोग के लिए आगे आना चाहिये उसका आदर करना चाहिये, बराबरी का दर्जा देना चाहिये, एकालाप की जगह संवाद करे। नियन्त्रण की जगह सम्प्रेषण दे बराबर का साथी समझ प्रेम दे तो घर आँगन स्वर्ग हो सकता है और जीवन सरस नारी को आर्थिक सम्बल मिलना चाहिए। उसके पाँवों के नीचे स्वावलम्बन की जमीन होनी चाहिये। आत्मनिर्भरता नारी का बहुत बड़ा सम्बल हो सकता है।

कविता का लाभ पाठक को मिलता है कवि को नहीं। नारी के यौवन का लाभ। उसके पति को मिलता है पिता को नहीं। यह युक्तियुक्त सत्य है। इसी सत्य को शाश्वत करने अपने पति को नवयौवना समर्पित होती है, प्रेम करती है। घर को स्वर्ग बनाने के लिए सब सहती है। पुरुष है कि नारी को अपना शिकार मानकर चबा जाना चाहता है। गंगा राजा शान्तनु का घर छोड़कर क्यों गयी ? उसकी शर्त थी कि शांतनु गंगा के कृत्यों पर पूरा भरोसा करे, कोई शंका प्रश्न खड़ा न करे, वह अपने विवेक से स्वतंत्र जीना चाहती थी। शांतनु धीरज नहीं रख पाये, शंकालु हो गये और प्रश्न कर बैठे जिससे गंगा को फिर स्वर्ग लौट जाना पड़ा वरना वह शांतनु की पत्नी बनकर उनके साथ आजीवन रहती। उनके पुत्र भी सब जीवित हो जाते, पर आदमी की अधीरता ही उसे मार देती है और वह नारी की नजरों से गिर जाता है। नारी आदमी के धीरज की कसौटी है, उस पर खरा उतरना आदमी को सीखना चाहिए।

रिश्ते वे ही श्रेष्ठ होते हैं जिन्हें हम जी सकें। अगर रिश्ते ढोने की स्थिति में आ जाये तो स्वतन्त्र रिश्ते कायम कर लेना शुभ होता है। अभिनेत्री कुनिका का मानना है कि जिन्दगी के पलों को किसी खूटे से बँधकर रोते हए नहीं बिताना चाहिये। उनका मानना है कि रिश्ते जिन्दगी से ऊपर नहीं होते, जिन्दगी में कोई आता है, प्यार देता है, जिन्दगी सरस करता है तो उसके साथ भरपूर जीना चाहिये और अगर ऐसा नहीं है, आपका पति कहीं और इश्क लड़ाये तो आपको इश्क लड़ाने में शर्म कैसी ? वह स्वतन्त्र है यदि प्यार करने में तो आप को बाधा कहाँ? उनका कहना है कि उन्होंने दो शादियाँ की, दोनों को तोड़ दिया, स्वतन्त्र जी रही हूँ। वह रिश्तों के ढोने में विश्वास नहीं करती। वे अपने रिश्तों की टूटने में न स्वयं को दोषी मानती है न दोनों पतियों को वे जीवन को ईश्वर की देन मानती हैं जिसे चलाने के लिए अन्न पानी की आवश्यकता है वैसे ही साथ जीने के लिए भावना का होना, सहयोग, सहभागिता का होना जरूरी है।

किरण चौपड़ा का कथन है कि हर सफलता के पीछे किसी न किसी का हाथ जरूर होता है। मुम्बई की एक सड़क पर भेलपूरी बेचने वाले अनपढ़ साधारण व्यक्ति ने अपनी पत्नी को डॉक्टर बना दिया। जब उनकी शादी हुई उसकी पत्नी दसवीं पास थी फिर मेहनत और प्रेरणा के बल पर डॉक्टरी की ऐसे ही अनेक उदाहरण हैं कवि कालिदास महापंडित एवं महाकवि बनाने वाली उनकी पत्नी विद्योत्तमा ही थी। परस्पर सहयोग और सहभागिता से प्रेरणा पाकर कौन है जो अपने लक्ष्य का भेद नहीं कर सकता। आदमी अपनी मानसिकता बदलकर सहयोग करे तो नारी अपने लक्ष्यों को सहज पा सकती है, फिर उसको किसी भी अपराध बोध

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 5, June 2022
Impact Factor: 6.252

की पीड़ा नहीं होगी। वह धरती को स्वर्ग बनाने में कीपरी भागीदार हो सकेगी। आवश्यकता है नर अपनी मानसिकता और आचरण बदले।

देश में प्रतिवर्ष 20 हजार युवतियों एवं नारियों का अपहरण होता है जिनमें 70 रानी बालिकायें और महिलायें होती है जिनकी उम्र 10 से 30 वर्ष होती है। उनमें सुन्दर बालिकाओं से वेश्यावृत्ति व कुरूप से भिक्षावृत्ति कराई जाती है। राजस्थान पत्रिका पर 23 सितम्बर के अंक में प्रकाशित आँकड़ों के अनुसार देश में हर 23 मिनट में एक अपहरण होता है विश्व अपहरण बाजार में भारत छठे नम्बर पर है और भारत में बिहार तथा उत्तर प्रदेश अव्वल नम्बर पर आते हैं। नेशनल क्राइम रिकार्ड के अनुसार अपहरण होने वाले राज्य में उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, असम, आंध्रप्रदेश, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात और तमिलनाडु शामिल हैं। देश का कोई भाग ऐसा नहीं है जहाँ अपहरण की वारदात न होती हो। जम्मू कश्मीर उड़ीसा, झारखण्ड, कर्नाटक, हरियाणा, पंजाब भी अछता नहीं है। जान को जोखिम में डालने के डर से बहुत से परिवार इन अपहरणों की जानकारी पुलिस को भी नहीं देते। अकेले बिहार में सन् 1992 से लेकर 2004 तक 32 हजार 85 अपहरण हुए पिछले साल वहाँ 1800 अपहरण हुए उत्तर प्रदेश में वर्ष 2006 में 2256 अपहरण की घटनायें हुईं। इन वारदातों में ज्यादातर युवतियों का अपहरण होता है जिन्हें कोई नशीली चीजें खिलाकर या रोजगार आदि का लोभ देकर उड़ाया जाता है। इस प्रकार के अपहरणकर्ताओं के लम्बे हाथ हैं जिनके देश–विदेश में बड़े गिरोह है। पुलिस भी इन गिरोहों की करततों के सामने निराश है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि इन गिरोहों के लोग गरीबों की बस्ती में जाकर युवतियों को अच्छी नौकरी का लच देकर फंसा लेते है फिर उन्हें लाकर अड़ों में बेच दिया जाता है। कई लड़कियो धक बनाकर रख दिया जाता है जहाँ उनकी दुर्गति होती है।

निष्कर्ष:

इस प्रकार हम कामकाजी महिलाओं के विषय पर चर्चा करते समय महिलाओं के लिए अवसरों पर मुख्या जोर दिया जाना चाहिए क्योंकि यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। हर इन्सान की तरह एक स्त्री में भी जन्मजात क्षमता और क्षमताओं की अभिव्यक्ति की स्वाभाविक इच्छा होती है। एक छोटा सा बच्चा भी अपनी स्वाभाविक हरकतों से अपनी स्वाभाविक हिम्मत दिखाता है। इसलिए यदि कोई महिला कुछ सिखती है तो उसे उसको व्यक्त करने के लिए तरसती है यह काफी उत्साहजनक है कि महिलाओं के पास अपने व्यक्तित्व और प्रतिभा के दावे के लिए अधिक अवसर और सम्भावनाएं है। अपने आरामदायक वातावरण के साथ महिलाओं के लिए सेवा क्षेत्र में अवसरों की वृद्धि की है। जहाँ से वे दूर से भी सक्रिय रूप से भाग ले सकती है और उत्कृष्टता प्राप्त कर सकती है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि हमें कामकाजी महिलाओं के जीवन के संबंध में हर तरफ से सुधार करना अतिआवश्यक है। हमें एक दूसरे की मदद करने अपने ज्वलत मुद्दों को उठाने के लिए लामबन्द होना चाहिए कामकाजी के महिलाओं के जीवन में सुधार करने के लिए नये कानूनों के लिए सरकार के प्रस्ताव में रखने की जरूरत है।

संदर्भ सूची

1. भारतीय स्त्री का मुक्त का सपना, आशारानी व्होरा, पृ0 18
2. स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार, पृ0 23
3. कालीफार वीमेन, दिल्ली द्वारा 1989 में प्रकाशित पुस्तक रिकास्टिंग वीमेंन ।
4. आशीष नंदी, सती, पृ० 4–5
5. स्त्री संघर्ष का इतिहास– राधा कुमार, पृ0 38
6. स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधाकुमार, पृ0 40

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 5, June 2022
Impact Factor: 6.252

7. सोर्स मैटेरियल फार ए हिस्ट्री आफ द फ्रीडम मूवेंट इन इंडिया,
8. स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधाकुमार, पृ0 127–128
9. आर0 के0 शर्मा, नेशनलिज्म, सोशल रिफाम एंड वीमेन, पृ0 6
10. भारतीय स्त्री की मुक्ति का सपना, आशारानी व्होरा, पृ0 153
11. स्त्री मुक्ति का सपना, महादेवी वर्मा, पृ0 73
12. स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधाकुमार, पृ0 352